अध्याय 11.

आचार्य श्री ज्ञानसागरजी

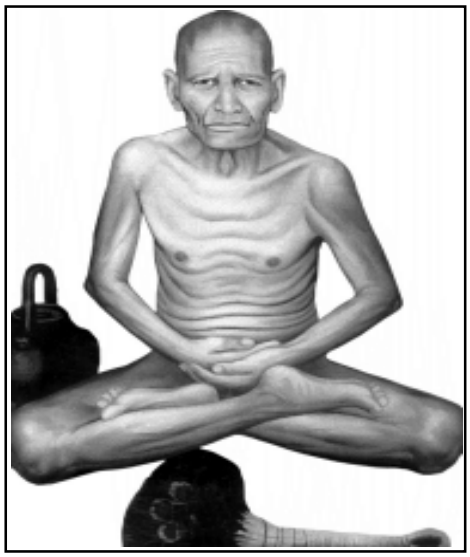

1. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज कौन थे ?

आचार्य श्री शान्तिसागरजी के प्रथम शिष्य आचार्य श्री वीरसागरजी, आचार्य श्री वीरसागरजी के प्रथम शिष्य आचार्य श्री शिवसागरजी, आचार्य श्री शिवसागरजी के प्रथम शिष्य आचार्य श्री ज्ञानसागरजी थे ।

2. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी का सामान्य परिचय क्या है ?

आपका पूर्व नाम	–	भूरामलजी।
अपर नाम	–	शांतिकुमार।
माता	–	श्रीमती घृतवरी देवी।
पिता	–	श्री चतुर्भुज छाबड़ा।
दादी	–	श्रीमती गट्टू देवी।
दादा	–	सुखदेवजी।
भाई	–	आप कुल 5 भाई थे। छगनलाल, भूरामल, गङ्गाप्रसाद, गौरीलाल एवं देवीदत्त।
जन्म	–	विक्रम संवत् 1948 सन् 1891 में।
स्थान	–	राणोली, जिला-सीकर (राजस्थान)।
पिता की मृत्यु	–	सन् 1902 में।
शिक्षा	–	प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के विद्यालय में एवं शास्त्री स्तर की शिक्षा स्याद्वाद महाविद्यालय बनारस में हुई थी।

3. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी का प्रारम्भिक जीवन कैसा रहा था ?

कहा जाता है कि सरस्वती एवं लक्ष्मी साथ-साथ नहीं रहती है, यह कहावत आचार्य श्री ज्ञानसागरजी पर पूर्णत: घटित हुई थी। प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के प्राथमिक विद्यालय में हुई। साधनों के अभाव में आप आगे अध्ययन न कर अपने अग्रज के साथ नौकरी हेतु गया (बिहार)आ गए। वहाँ एक सेठ के यहाँ आजीविका हेतु कार्य करने लगे, किन्तु आपका मन आगे अध्ययन करने का था। संयोगवश स्याद्वाद महाविद्यालय बनारस के छात्र किसी समारोह में भाग लेने हेतु गया में आए। उनके प्रभावपूर्ण कार्यक्रमों को देखकर भूरामलजी के भाव अध्ययन हेतु वाराणसी जाने के हुए। आपकी तीव्र इच्छा देख आपके अग्रज ने जाने की अनुमति दे दी। पढ़ाई के खर्च एवं भोजन के खर्च के लिए आप गङ्गा के घाट पर गमछा बेचते थे। उससे प्राप्त आय से खर्च की पूर्ति करते थे। बाद में किसी ने कहा आपको खर्च महाविद्यालय से मिल जाएगा, किन्तु स्वावलम्बी जीवन जीने वाले भूरामलजी ने मना कर दिया। वाराणसी से शास्त्री की परीक्षा पास कर आपने व्याकरण, साहित्य, सिद्धान्त एवं अध्यात्म विषयों के अनेक ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया।

बनारस से लौटकर आपने साहित्य साधना, लेखन, मनन करके अनेक ग्रन्थों की रचना संस्कृत तथा हिन्दी में की। वर्तमान शताब्दी में संस्कृत भाषा के महाकाव्यों की रचना को जीवित रखने वाले मूर्धन्य विद्वानों में आपका नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। काशी के दिग्गज विद्वानों ने प्रतिक्रिया की थी, ''इस काल में भी कालीदास और माघ कवि की टक्कर लेने वाले विद्वान् हैं, यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होती है।'' इस प्रकार जिनवाणी की सेवा में 50 वर्ष पूर्ण किए। किन्तु ''ज्ञानं भारं क्रियां बिना'' क्रिया के बिना ज्ञान भार स्वरूप है - इस मन्त्र को जीवन में उतारने हेतु आप त्याग मार्ग पर प्रवृत्त हुए।

4. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी का चारित्र पथ किस प्रकार था ?

1. ब्रह्मचर्य प्रतिमा	-	व्रत रूप में सन् 1947, वि.सं. 2004 में।
2. क्षुल्लक दीक्षा	-	25 अप्रैल, सन् 1955 में वि.स. 2012 में अक्षय तृतीया के दिन। मन्सूरपुर, मुजफ्फर नगर, (उत्तरप्रदेश) के पार्श्वनाथ जिनालय में स्वयं ली थी।
3. मुनि दीक्षा	-	आषाढ़ कृष्ण द्वितीया 22 जून, सन् 1959, सोमवार वि.सं. 2016 स्थान खानियाँ जी जयपुर (राजस्थान)
4. दीक्षा गुरु	-	आचार्य श्री शिवसागरजी महाराज।
5. मुनि दीक्षा कब दी	-	30 जून, सन् 1968, आषाढ़ शुक्ल, पंचमी, वि.सं. 2025 को बा. ब्र. विद्याधर को अजमेर में मुनि दीक्षा दी।
6. आचार्य पद कब मिला	-	7 फरवरी, सन् 1969, फाल्गुन कृष्ण पंचमी, वि.सं. 2025 को नसीराबाद (राज.) में समाज ने दिया। इस दिन एक साधक को मुनि दीक्षा दी थी। नाम मुनि श्री विवेकसागरजी रखा था।

7.	आचार्य पद त्यागना एवं सल्लेखना व्रत ग्रहण	–	22 नवम्बर, सन् 1972, मगसिर कृष्ण द्वितीया को अपने प्रथम शिष्य मुनि श्री विद्यासागरजी को नसीराबाद में आचार्य पद दिया एवं सल्लेखना के लिए निवेदन किया।
8.	समाधिस्थ	–	ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या, 1 जून, सन् 1973, शुक्रवार वि.सं. 2030 में स्थान नसीराबाद (राज.)।
9.	समाधिस्थ समय	–	प्रातः 10 बजकर 50 मिनट पर।
10.	सल्लेखना काल	–	6 माह 13 दिन (तिथि के अनुसार)
11.	सल्लेखना काल	–	6 माह 10 दिन (दिनांक के अनुसार)

5. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी ने क्या-क्या साहित्य लिखा है ?

संस्कृत भाषा में -

महाकाव्य	– दयोदय, जयोदय और वीरोदय।
चरित्रकाव्य	– सुदर्शनोदय, भद्रोदय और मुनि मनोरंजनाशीति।
जैनसिद्धान्त	– सम्यक्त्वसारशतकम्।
धर्मशास्त्र	– प्रवचनसार प्रतिरूपक।

हिन्दी भाषा में -

चरित्रकाव्य	– ऋषभावतार, भाग्योदय, विवेकोदय और गुण सुंदर वृतान्त।
धर्मशास्त्र	– कर्त्तव्यपथप्रदर्शन, सचित्तविवेचन, सचित्तविचार, तत्त्वार्थसूत्र, तत्त्वार्थसूत्र टीका और मानवधर्म।
पद्यानुवाद	– देवागमस्तोत्र, नियमसार और अष्टपाहुड।
अन्य	– स्वामीकुन्दकुन्द, सनातन जैनधर्म और जैनविवाहविधि।

6. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी ने ज्ञानदान कौन-कौन को दिया ?

अनेक साधु, आर्यिकाएँ, एलक, क्षुल्लक, ब्रह्मचारी एवं श्रावकों को दिया। आचार्य वीरसागरजी के संघ में, आचार्य शिवसागरजी के संघ में, आचार्य धर्मसागरजी, आचार्य अजितसागरजी एवं वर्तमान में श्रेष्ठ आचार्य विद्यासागरजी इसके अनुपम उदाहरण हैं।

7. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी की सल्लेखना किस प्रकार हुई थी ?

सर्वप्रथम आचार्य ज्ञानसागरजी ने अपने आचार्य पद का त्याग किया और वह पद मुनि विद्यासागर को दिया एवं उन्होंने आचार्य विद्यासागरजी से निवेदन किया कि मेरी सल्लेखना करा दें। वैसे आचार्य परमेष्ठी के लिए नियम है कि वे दूसरे संघ में सल्लेखना लेने जाएं, वे क्यों नहीं गए मेरे मन में एक चिन्तन आया कि आचार्य ज्ञानसागरजी ने सब कुछ अपने शिष्य विद्यासागरजी को सिखा दिया, कैसे पढ़ाया जाता है ? कैसे शिष्यों की भर्ती की जाती है? कैसे दीक्षा दी जाती है? कैसे संघ चलाया जाता है? आदि, किन्तु यह नहीं सिखाया कि सल्लेखना कैसे दी जाती है ? इसलिए उन्होंने स्वयं सल्लेखना विद्यासागरजी से ली, जिससे वे भी सीख जाएँ। करोड़ों रुपयों की जायदाद पाने वाला बेटा भी वैसी सेवा पिता की नहीं करता जैसी सेवा आचार्य श्री विद्यासागरजी ने अपने गुरु आचार्य श्री ज्ञानसागरजी की।

आचार्य श्री ज्ञानसागरजी को साइटिका का दर्द रहता था। जिससे वे गर्मी के दिनों में भी बाहर शयन नहीं करते थे। तब भी आचार्य विद्यासागरजी अन्दर गर्मी में शयन करते थे। हमेशा जागृत अवस्था में ज्ञानसागरजी रहते थे। उन्होंने लगभग 6 माह पहले अन्न का त्याग कर दिया था एवं 4 उपवास के साथ राजस्थान की भीषण गर्मी में यम सल्लेखना सम्पन्न हुई थी।

अभ्यास

सही या गलत बताइए -

1. भूरामल का अपर नाम शांतिलाल था।
2. आपका जन्म 1891 वि.सं. में हुआ था।
3. भूरामल की माता का नाम घृतवरीदेवी था।
4. भूरामल के पाँच भाई थे।
5. भूरामल की मुनि दीक्षा खनियाँधाना में हुई थी।
6. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी के दादा गुरु आचार्य श्री वीरसागरजी थे।
7. 30 जून सन् 1968 को मुनि श्री ज्ञानसागरजी को आचार्य पद मिला था।
8. 22 नवम्बर सन् 1972 को आचार्य श्री ज्ञानसागरजी ने अपने आचार्य पद का त्याग कर दिया था।
9. अजैन विद्वान् ने कहा था, आज कालीदास और माघकवि की टक्कर लेने वाले विद्वान् हैं।

अन्यत्र खोजिए -

1. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी के मुनि एवं आचार्य पद के साथ वर्षायोग कहाँ-कहाँ हुए थे ?
2. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी ने कितनी दीक्षाएँ दी थीं ?
3. आचार्य श्री ज्ञानसागरजी के प्रथम शिष्य ने सर्वप्रथम क्या त्याग किया था ?

सोलहकारण भावना

1.	दर्शन विशुद्धि	2.	विनय सम्पन्नता
3.	शील-व्रतादि का निरतिचार पालन	4.	अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग
5.	अभीक्ष्ण संवेग	6.	शक्तितस्त्याग
7.	शक्तितस्तप	8.	साधु समाधि
9.	वैयावृत्त्य	10.	अर्हत् भक्ति
11.	आचार्य भक्ति	12.	बहुश्रुत भक्ति
13.	प्रवचन भक्ति	14.	आवश्यक अपरिहाणि
15.	मार्ग प्रभावना	16.	प्रवचन वात्सल्य।